ੴ वाहिगुरू जी की फतहि ॥

237

साका ननकाना साहिब

5 रुपये

सिख मिशनरी कालेज (रजि:)
लुधियाना

ननकाणा साहिब

आम लोग जो सिख इतिहास से अवगत नहीं हैं, कई बार सिख बजुर्गों द्वारा डाले गए पदचिन्हों पर प्रश्न चिन्ह लगा देते हैं । उनके लिए उबलती देग में प्राण त्यागना, रंबियों से खोपड़ियां उतरवाना, नीवों में चिने जाना, बंद-बंद जुदा करवाना, आरे से जिंदा जी चिर जाना आदि असंभव है । यह अब की दशा नहीं, आज से 57? वर्ष पूर्व भी आम लोग ऐसा ही सोचा करते थे । उस समय एक ऐसा कांड हुआ जिस ने पिछले इतिहास को दोहराया ही नहीं बल्कि दुनियां को हिला कर रख दिया । आओ! उस पर आज विचार करें ।

ननकाणा साहिब सतगुरु नानक देव जी का जन्म स्थान है । इसलिए गुरद्वारों में इस का शिरोमणी स्थान है । ननकाणा साहिब का कांड 19वीं शताब्दी में आरंभ में हुआ। इसने जहां पुरातन सिख इतिहास की याद को ताजा कर दिया वहीं आने वाले समय के लिए भी विशेष पद चिन्ह स्थापित कर दिए । ननकाणा साहिब में गुरद्वारा जन्म स्थान पर हुए इस कांड को समझने के लिए हमें गुरद्वारा सुधार आंदोलन या अकाली आंदोलन व उस से भी पहले की दशा पर एक मोटी सी नजर मारनी होगी ।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पश्चात, साठ-सत्तर वर्ष का समय, खालसा के लिए बहुत करड़ी परीक्षा का समय था । हुकूमत खालसे का खुरा खोज मिटा देने पर तुली हुई थी । शाही हुकम इन शब्दों में जारी किये हुए थे :

"नानक परस्तां रा हर जा कि बाइदे बा कत्ल रसानेद"

नानक नाम लेवा जहां भी हों कत्ल कर दिए जायं । सिखों के सिरों का दाम मिलता था । सिख घर-घाट छोड़ कर जंगलों-कंद्राओं व मारूस्थलों में जा छिपे थे । जो बाहर रहे वे मारे गए । ऐसी दशा में गुर-स्थानों की संभाल, सिखों के लिए संभव ही नहीं थी । ऐसी विपत्ति के समय में यदि ये स्थान कायम रह सके तो यह सब उदासी संप्रदाय के संतों के सहयोग के परिणाम स्वरूप ही संभव हो पाया । उस समय इन संतों की यह बड़ी सेवा थी कि इन्होंने गुरु स्थलों को संभाल कर रखा । परंतु उन के निजी विश्वास और प्रचलित हिंदू प्रभाव में, गुर स्थान ब्राहमणी रंगत पकड़ते गए । इन में देवी

अनुवाद : स. कुलबीर सिंघ, नई दिल्ली / अप्रै. 2000

देवताओं के अतिरिक्त मनोकल्पित गुरु-मूर्तियों की स्थापना आरंभ हो गई । गुरद्वारों की मर्यादा हिंदू ठाकुरद्वारों वाली हो गई । फिर सिख मिसलों और महाराजा रणजीत सिंघ का समय आया । सिख राज्य के समय चाहे गुरद्वारों की जायदादें व इमारतें बनाने की ओर कुछ ध्यान दिया गया, परंतु इन की आंतरिक मर्यादा उदासी संतों के हाथ ही रही । सन 1849 में पंजाब में अंग्रेजी राज्य हो जाने के पश्चात, लगभग 70 साल तक इस दिशा में कोई सुधार नहीं हुआ बल्कि अंग्रेज तो गुरद्वारों के महत्व को घटा कर ही खुश था जिस के लिए श्री हरिमंदर साहिब अमृतसर व तरन तारन आदि गुरद्वारे तो सीधे सरकार द्वारा नियुक्त संरक्षकों के हाथों में सौंपे गए । अन्य गुरद्वारों के लिए संबंधित महंत और पुजारी, सरकार के पिटठू बनाए गए । इस प्रकार सरकार द्वारा शह मिलने पर इन को अपनी मनमानियां करने के लिए उकसाया गया।

इसी समय ही सन 1873 में **सिंघ सभा लहर** का आरंभ हुई । इस लहर की कौम को सब से बड़ी देन थी, शिक्षा प्रचार के साथ-साथ सिख धर्म व रहित मर्यादा को ठीक अर्थों में सिखी रंगत देना। सिंघ सभा लहर ने प्रचार के भिन्न केंद्र स्थापित किये, जिन को सिंघ सभाएं कहा जाता है । परंतु इतिहासिक गुरद्वारों में से महंतों व पुजारियों ने, जो ब्राहमणी प्रभाव में होने के अतिरिक्त सरकार के इशारे पर नाचते थे, सिंघ सभा लहर के प्रभाव को स्वीकार नहीं किया । इस की एक मिसाल इस प्रकार है :

तथाकथित अछूत जातियों में से एक प्राणी ने केश रख कर खडे का अमृतपान किया और अपने सारे परिवार को सिंघ सजाया । यह नवसृजित सिंघ, परिवार सहित कढ़ाह-प्रशाद का थाल सिर पर उठा कर बहुत सम्मान सहित श्री हरिमंदर साहिब, अमृतसर दर्शनार्थ गया । पुजारियों ने न केवल इसके द्वारा लाए गए प्रशाद को ही वापिस कर दिया बल्कि उसको धक्के मार कर बाहर निकाल दिया । बाहर जा कर इसने परिवार सहित इसाई पादरी से बपतिस्मा (दीक्षा)ले कर इसाई मत को धारण कर लिया । उसने केश कटवा कर हैट पहन लिया । जीवन शैली इसाइयों वाली अपना ली अथवा टाई, पैंट, कोट धारण कर लिए । कुछ समय पश्चात यही इसाई रोब से श्री हरिमंदर साहिब पहुंचा जहां बहुत सम्मान सहित इस को दर्शन करवाए गए और सिरोपा भेंट किया गया ।

ऐसी ही दशा में गुरद्वारा सुधार आंदोलन, जो पहले विश्व युद्ध की

समाप्ति के थोड़े समय बाद ही शुरू हुआ था, ने 6-7 साल तक शक्तिशाली अंग्रेज राज्य को अफड़ा-दफड़ी डाले रखी थी । इस को समझने के लिए इसके कारणों पर विचार करना आवश्यक है ।

अंग्रेजी साम्राज्य की रणनीति में पंजाब को विशेष स्थान प्राप्त था । यहां के मुसलमानों व सिखों को भर्ती के समय प्राथमिकता मिलती थी और सिखों को अधिक पसंद किया जाता था । ओडवायर की नजरों में "हिंदुस्तान में फौजी स्थिति की कुंजी पंजाब थी और यह हिंदुस्तानी फौज के लिए मुख्य भर्ती क्षेत्र था । जंग के चार वर्षों में सिखों ने अपनी कुल 25 लाख की आबादी में से (ब्रिटिश इंडिया का एक प्रतिशत से भी कम) 90 हजार से किसी तरह भी कम, लड़ाकू जवान उपलब्ध नहीं थे किए ''। (India as I know it- by MO Dioer) इसलिए पंजाब में कोई ऐसी धार्मिक या राजनीतिक लहर नहीं उठने दी जाती थी जो भर्ती को अवरूद्ध कर के सैनिकों पर बुरा असर डाले और सरकार को परेशान करे । इसी कारण लायलपुर की 1906-07 की गदर लहर को बेरहिमी से कुचल दिया गया ।

सन 1857 के गदर के पश्चात, 1858 में महाराणी विक्टोरिया ने एलान किया था कि उसकी सरकार हिंदुस्तानी लोगों के मजहबी मामलों में दखल नहीं देगी । जहां तक सिख धर्म व उनके गुरद्वारों का संबंध था, अंग्रेज हाकिमों की पालिसी इस ऐलान के विपरीत थी कि सिख धर्म और गुरद्वारा प्रबंध में दखल दिया जाए और सिखों को अपने अधीन, या कम से कम प्रभाव में रखा जाए और अपने राज्य की मजबूती के लिए इन्हें प्रयोग किया जाए ।

वैसे भी अंग्रेज हाकिम ऐसे ऐलान, अमल में लाने के लिए नहीं किया करते थे बल्कि लोगों की आंखों में धूल झोंक कर, ऐसे एलानों को छींके पर टांग देने की नीयत से किया करते थे । इसी कुटिल नीति के अनुसार सिख राज्य की हार के कुछ वर्ष पश्चात ही अंग्रेजों ने दरबार साहिब अमृतसर पर, उस से संबंधित गुरद्वारों को अपने अधीन कर लिया और सिख सिद्धांतों को तोड़ना मरोड़ना और दरबार साहिब व अन्य गुरद्वारों को अपने राज्य की मजबूती के लिए प्रयोग करना शुरु कर दिया ।

1881 में पंजाब के लैफ्टिनेंट गवर्नर इजर्टन ने लार्ड रिप्पन को चिट्ठी लिखी जिस में उसने कहा, "सिख गुरद्वारों के प्रबंध को ऐसी कमेटी के हाथों में जाने देने की आज्ञा देना जो सरकारी नियंत्रण से आजाद हो चुकी हो, राजसी

तौर पर खतरनाक होगा ।''

अंग्रेजों ने सिख नेताओं को अपने राजनीतिक स्वार्थों के लिए ढाल लिया था ताकि वे सिखों को लड़ने वाली मशीन के तौर पर अपने राज्य की रक्षा तथा प्रसार के लिए प्रयोग कर सकें । सिंघ सभा लहर, चीफ खालसा दीवान, एजूकेशनल कान्फ्रेंस आदि की वफादारी ने सिखों की सोचने की शक्ति को ताले तो लगा दिए थे । उनके दिमाग में कूट-कूट कर भर दिया गया था कि अंग्रेज आए ही गुरू तेग बहादुर जी की भविष्यवाणी के अनुसरण में हैं । मैकालिफ ने इस संबंध में इंगित करते हुए लिखा था कि सिखों के पवित्र ग्रंथ में ब्रिटिश लोगों की वफादारी के आदेश विभिन्न भविष्यवाणियों के द्वारा दिए गए हैं। उसके विचार में यह ऐसी भविष्यवाणियां हैं जिन्होंने सिखों को ब्रिटिश राज्य की अत्यंत वफादार श्रद्धालु और बहादुर प्रजा बनाया है ।''(Memo-The Politics of Sikh Community, Singh Sabha and the Chief Khalsa Diwan by D Petrie) सारांश यह है कि अंग्रेजों के लिए सिखों की वफादारी की शर्त यह थी कि सिख धर्म वैसा चले जैसा अंग्रेजों के माफिक हो । सिखों द्वारा विद्या प्राप्त करने व लिख पढ़ जाने से उनको डर लगता था और वे खालसा कालेज अमृतसर को भी अपने अधीन ही रखना चाहते थे । सरकार को यह खतरा भी था कि कभी तत्त खालसा पार्टी(सिंघ सभियों) ने दरबार साहिब पर कब्जा कर लिया और यदि यह धार्मिक मामलों में लीडरशिप प्राप्त करने की स्थिति में आ गए तो परिणाम बहुत गंभीर निकल सकते थे । इसलिए अंग्रेज शासकों ने अपने संरक्षकों व अन्य पिट्ठुओं के द्वारा पुजारियों को पहले ही तैयार कर दिया था कि वह सिंघ सभियों से सावधान रहें क्योंकि वे रामदासियों, चूहड़ों व कमीनों को अपने में शामिल कर रहे हैं । इसलिए उनको, यदि वे दरबार साहिब आवें तो मुंह न लगाओ । अंग्रेजी राज्य के प्रभाव में पुजारी, सिख धर्म के सिद्धांत त्याग चुके थे और ब्रिटिश सरकार के ढांचे का अंग बन चुके थे । इन सिखों को गुलाम बनाए रखने और दूसरी कौमों को गुलाम बनाने के लिए उन्होंने प्रयोग किये । यह थी सरकार की नीति ।[1]

सरकार अपने हाथों से गुरद्वारे नहीं छोड़ना चाहती थी क्योंकि इतिहासिक गुरद्वारों के साथ बहुत बड़ी धार्मिक शक्ति व दौलत जुड़ी हुई थी और सरकार

---

1 वर्तमान दशा को गौर से देखें तो हमारे धार्मिक लीडर और तथाकथित साधु-संत भी पराधर्मियों व सरकार झोलीचुकी? करते हैं और सिख पंथ के हितों को अपने निजी हितों से न्योछावर कर देते हैं ।

ने लगातार इस दौलत व शक्ति को अपने राज्य व राजसी हितों में प्रयोग किया।

1919 की बैसाखी को अमृतसर में जलियां वाले बाग के स्थान पर पूर्ण शांति पूर्ण सत्याग्रहियों पर 1000 गोलियां चलाई गई और सैंकड़े आदमी मारे गए । इसके पश्चात पंजाब में कुछ और दंगे हुए । इसके फलस्वरूप सरकार ने कई प्रकार की सख्तियां कीं जैसे कि मार्शल ला लगाना, कार्यकर्ताओं को लंबी लंबी कैद व मौत की सजाएं, कसूर में सख्तियां, गुजरांवाले में हवाई जहाजों के द्वारा बंबों की वर्षा, अमृतसर में लोगों को पेट के बल चलने को मजबूर करना, बैंत मारने की सजाएं, औरतों के अपमान और अन्य असंख्य अत्याचार किए ।

अप्रैल 1919 में ये थे अमृतसर और पंजाब के दर्दनाक हालात । इसी अमृतसर ने अगले 6 वर्ष में अकाली लहर का गढ़ बनना था और सिखों को संगठित करके अंग्रेजी राज्य से डट कर सामना करना था ।

इसके अतिरिक्त कुछ और भी कारण थे जिन्होंने हालात को उभारा। स्वयं सिखों के धार्मिक जज्बों को सरकार कई सालों से कुचलती आ रही थी जैसे कि कृपाण साहिब का पानी बंद करना आदि । इन मसलों ने सिखों को बहुत दुखी किया हुआ था और उनके दिल कुछ करने के लिए उबाल खा रहे थे । दशा यहां तक खराब हो चुकी थी कि पुजारी, गुरद्वारों में सुधार करने वालों को घृणा की दृष्टि से देखते थे । वे देश सेवकों को, जो अंग्रेजी साम्राज्य से बागी थे, सिखी से पतित होने के फतवे देते थे और तथाकथित अछूतों से सिंघ सज जाने वालों की अरदास नहीं किया करते थे । दूसरी ओर जो अंग्रेज या एंग्लो-इंडियन हाकिम गुरद्वारे में आ जाते तो यह उन के आगे पीछे भगे फिरते थे । उनको सिरोपा देते थे और उन पर अंग्रेज राज्य के पूरे वफादार और अधीन होने का प्रभाव छोड़ते थे । पूजा का धान खा-खा कर इन की सिखी गैरत व स्वाभिमान मर चुका था और ये अंग्रेज हाकिमों के पूर्ण गुलाम बन चुके थे । जब काबे में ही कुफर उठने लगे तो इसलाम ने कहां रहना हुआ !

ये मसंद जनरल डायर जैसे खूंखार दरिंदे को सिख बनाने का हास्यास्पद नाटक रचते थे और उसको बधाइयां देते थे कि उसने जलियां वाले बाग में अंधाधुंध गोलियां चला कर निहत्थे व शांत बैठे पंजाबियों की खाल उधेड़कर बुराई को फैलने से पहले ही कुचल दिया था । इस प्रकार उसने सिखों का

भरोसा, प्यार व एहसान जीत लिया है । यह था नैतिक व धार्मिक गिरावट का अस्तित्व । अंग्रेज साम्राज्य को यहां पर कायम रखने के लिए यह तथाकथित सिख नेता व पुजारी वर्ग, सिख गुरद्वारों व सिख मत को अपने निजी हितों के लिए जैसे चाहें प्रयाग कर सकते थे और उन्होंने दोनों का खूब प्रयोग किया।[2]

उस समय, गुरद्वारों की संपत्तियां जो श्रद्धालुओं ने गुरद्वारों के रख-रखाव के लिए व लंगर चलाने के लिए दी हुई थीं, अंग्रेजी सरकार ने अपने पिटठु महंतों को गुरद्वारों व अन्य जायदादों के मालिक बना दिया । इनकी आय ने साधु महंतों को ऐशप्रस्त बना दिया । उन्होंने धर्मशालाओं(गुरद्वारों) के दरवाजे बंद कर दिए और उनको अपने आरामदायक घर बना कर, जमीनों के मालिक बन बैठे । यह थी छोटे गुरद्वारों की दशा ।

जहां तक बड़े गुरद्वारों के कब्जे का इतिहास है, उन पर काबिज महंत अंग्रेजों के आने व सिख संगत के नियंत्रण से स्वतंत्र हो गए । संगत के महंत को चुनने के अधिकार व एग्ज़ीक्यूटिव व माल अफसरों(Revenue officer) ने छीन लिया और अफसरों की मदद से महंत जमीनों पर काबिज हो गए तथा गुरद्वारों को अपनी निजी जायदाद समझने लग गए । यह ब्रिटिश सरकार ही थी जिस ने अपने अधिकारियों के परोक्ष या अपरोक्ष प्रभाव में दुराचारी महंतों को गुरद्वारों के मालिक बनने की आज्ञा दी । इस बारे में प्रिंसीपल निरंजन सिंघ जी लिखते हैं :

" अंग्रेजों ने पंजाब को 1849 में अपनी सल्तनत में शामिल किया और जब परविर्तन का दौर था तो अमृतसर दरबार साहिब जो कि सिख धर्म का केंद्र है, के मामले गड़बड़ में पड़े हुए थे । उस समय अमृतसरी सिखों की ट्रस्टी के तौर पर एक कमेटी बनाई गई थी जिस का संरक्षक सरकार द्वारा नियुक्त किया जाता था ।

अंग्रेज सरकार के द्वारा गुरु स्थानों के प्रबंध में ऐसे हस्तक्षेप को सहज ही समझा जा सकता है कि एक बार ब्रिटिश असेंबली में इस प्रश्न के उत्तर में बताया गया कि भारत में अंग्रेजी राज्य को अगर किसी देसी शक्ति से भय हो सकता है तो वह सिखों से है । सिख की शूरवीरता तथा दलेरी का सारा भेद इस के उस भरोसे व विश्वास में है जो इसको अपने गुरु और गुरु के संग

---

2 आज भी हमारे नेताओं व गुरद्वारों की दशा कुछ इसी प्रकार की ही है । लीडर लोग गुरद्वारा स्टेजों को गुरमत प्रचार के स्थान पर अपनी चौधर व अहं के दिखलावे के लिए प्रयोग कर रहे हैं ।

संबंधित चीजों तथा धर्म स्थानों पर है । यदि सिखों का सिदक अथवा श्रद्धा को गुरु ग्रंथ साहिब से गिरा दिया जाए यदि सिख अपने गुरद्वारों के महत्व को भुला दें और यदि गुरुओं और सिख शहीदों का इतिहास व यादगारें सिखों से छीन ली जाएं तो सिख सहज ही खत्म हो सकता है ।

हालात ऐसे बदले कि 1881 में यह कमेटी(चुपचाप) हटा दी गई और संरक्षक के हाथ में कुल शक्ति आ गई । सिख संगत का नियंत्रण न होने के कारण गैर जिम्मेवारी व भ्रष्टाचार अस्तित्व में आ गया । दरबार साहिब में हिंदू देवी देवताओं की मूर्तियां काफी समय(सन 1922) तक पड़ी थीं । यह थी सहजे सहजे सिखी की जड़ों में तेल देने की अंग्रेजी पालिसी । 1919 तक चीफ खालसा दीवान सिखों की लगभग एकाएक केंद्रीय जत्थेबंदी थी और सरदार सुंदर सिंघ मजीठिया उस समय सिख कौम के वाहिद लीडर गिने जाते थे । इस केंद्रीय संगठन पर खानदानी सरदारों व धनाढय सिखों का कब्जा था और इन को अंग्रेज सरकार ने स्वाभाविक लीडर माना हुआ था । चीफ खालसा दीवान चाहे सिख धर्म के प्रचारक का काम करता था पर सरकार के साथ हर प्रकार का सहयोग करने और अपने लिए व सिखों के लिए कुछ पद लेना और लाभ उठाना, यही चीफ खालसा दीवान का बड़ा मनोरथ था ।''

(प्रिंसीपल निरंजन सिंघ, अकाली लहर की कुछ यादें: जत्थेदार 13-8-67)

सब से पहले लायलपुर के सिखों ने सरदार हरचंद सिंघ की अगवाई में एक दो-बार यत्न किंये और उर्दू के खालसा अखबार में चीफ खालसा दीवान की अंग्रेजी सरकार के प्रति अंधभक्ति के विरुद्ध आवाज उठाई जिस का कोई असर न हुआ । 10-12 अप्रैल 1914 को जलंधर में सिख एजूकेशनल कमेटी की वार्षिक कान्फ्रेंस में सरदार हरचंद सिंघ को गुरद्वारा रकाब गंज की दीवार के मसले पर प्रस्ताव पेश न करने दिया गया ।

गुरद्वारा सुधार के मसले पर कई बार सिखों ने अंग्रेजी सरकार को प्रस्ताव पास करके भेजे पर कोई सुनवाई न हुई और टाल मटोल ही होती रही । दूसरी ओर सिख, दरबार साहिब का प्रबंध अपने कब्जे में लेने को तत्पर थे ।

नवंबर 1918 को पहला विश्व युद्ध समाप्त हुआ । युद्ध के पश्चात सरकार ने बजट कम करने के लिए कई सैनिकों को नौकरियों से निकाल दिया और कालेज की डबल कंपनी को भी तोड़ दिया । ये सैनिक जब वापिस आए तो उन्होंने सब को ब्रिटिश साम्राज्य की कुटिल नीतियों से अवगत करवाया ।

लायलपुर ग्रुप ने गुप्त मीटिंगें करके यह निर्णय किया कि एक पंजाबी अखबार निकाला जाए जो 21 मई 1920 को *अकाली* के नाम पर शुरू किया गया । यह *रोजाना अकाली* अखबार ही था जो कि गुरद्वारा आजादी की लहर व कौमी आजादी के आंदोलन में लोगों की जुबान बन गया । इस अखबार के प्रबंधकों ने भी हर कुर्बानी करने के लिए पक्का इरादा किया हुआ था । जिस दृढ़ता व मजबूती से उन्होंने जेलों की कठोरता, जमानतों की ज़ब्तियां और व्यक्तिगत जुर्मानों और कुर्कियों का सामना किया उसने धर्म की स्वतंत्रता के लिए कुर्बानी व त्याग की नई बुनियाद रख दी । बाद में साप्ताहिक *बबर शेर* व *कृपान बहादुर* ने भी पत्रकारिता की यही राह अपनाई ।

मास्टर सुंदर सिंघ जी लायलपुरी *अकाली अखबार* की जी जान थे । इनके साथ सरदार मंगल सिंघ व ज्ञानी हीरा सिंघ दर्द संपादकीय मंडल में थे । मास्टर सुंदर सिंघ जी ने ही 1909 में एक पैंफ्लेट *क्या खालसा कालेज सिखों का है ?* लिख कर अंग्रेज हाकिमों को चक्कर में डाल दिया था । मास्टर सुंदर सिंघ व ज्ञानी हीरा सिंघ ने कहा कि सिख लीडरों ने गुरद्वारों के महंतों व राजाओं ने अंग्रेजी राज्य की वफादारी, राज्य भक्ति को धर्म बना कर सिख कौम को दुनियां में बदनाम करके रख दिया है । अब हमें मैदान में आकर कुछ करना ही होगा ।'

1920 में अकाली अखबार के प्रकाशित होते ही हवा का रुख बदलना शुरू हो गया । सिखों में नई चेतना पैदा होने लगी । इस समय तक गुरद्वारों की आज़ादी बहाल करने के लिए कोई केंद्रीय जत्थेबंदी नहीं बनी था । *अकाली* पत्र के धड़लेदार प्रचार का असर यह हुआ कि गांवों व शहरों में अपने आप, स्थान-स्थान पर अकाली जत्थे बनने लगे ।

अकालियों के हौंसले की शुरुआत रकाब गंज की दीवार के मोर्चे से होती है । जब सरदार सरदूल सिंघ कवीश्र ने *अकाली* में एक लेख छाप कर 100 सिखों का शहीदी जत्था तैयार करने की अपील की तो सदार दान सिंघ विछोआ और झबालिए भाइयों - सरदार अमर सिंघ व सरदार जसवंत सिंघ ने नाम लिखने शुरु कर दिए । तब शिरोमणी अकाली दल अभी स्थापित नहीं हुआ था । इक्का-दुक्का जत्थे, सेंट्रल माझा दीवान, बीर खालसा दीवान, अकाली दल, खरा सौदा, बार बन चुके थे । अतः इन जत्थों के प्रयास से गुरद्वारों पर कब्जे होने आरंभ हो गए ।

अक्तूबर 1920 में सिख लीग का इजलास, लाहौर सरदार खड़क सिंघ की अध्यक्षता में हुआ और शहीदी जत्थे की मीटिंग हुई जिस में तय हुआ कि पहली दिसंबर 1920 को जत्था दिल्ली पहुंचेगा और सरकार द्वारा गुरद्वारा रकाब गंज की चार दीवारी की दीवार को गिराए जाने के रोश में वायसराए की कोठी के सामने मोर्चा लगाएगा । उधर सरकार की होश भी टिकाने आई और महाराजा नाभा ने हस्तक्षेप कर के दीवार बनवा दी । यह सिख कौम की एक बहुत बड़ी जीत थी जिस ने अकालियों का मनोबल, जोश व हौंसले बढ़ा दिए।

अकूमत यह नहीं चाहती थी कि गुरद्वारे और उन की संपत्तियां सिख पंथ के हाथों में चली जाएं । क्योंकि गुरद्वारों की आजादी और इन की जायदादें कल को सरकार के हितों के लिए खतरनाक सिद्ध हो सकती थीं । इसलिए सरकार ने महंतों को सिखों से बागी करवाया । सरकार बीच में न होती तो महंतों ने चुपचाप समझौते करके, गुरद्वारे सिख पंथ के हवाले कर देने थे, या चाल चलन सुधार कर महंत बने रहना था, या फिर जीवन भर के लिए पेंशन ले कर अलग हो जाना था । सरकार सिखों और महंतों के समझौते के विरुद्ध थी । इसलिए उसने कुछ महंतों को अपने पक्ष में कर के, हो रहे समझौते भी सिरे नहीं चढ़ने दिए ।

सरकार की नीति यह थी कि खालसा कालेज को अपनी वफादारी का केंद्र बना कर रखा जाए और दरबार साहिब का प्रबंध अंग्रेज राज्य की मजबूती व हितों में अपने हाथों चुने, मनपसंद सिख संरक्षकों के द्वारा किया जाए । और तो और, इस को चीफ खालसा दीवान जैसी अंग्रेज भक्त जमात के हाथों में भी न जाने दिया जाए ।

उपरोक्त नीति के अनुसार, जोरदार विरोध के बावजूद, सरकार ने *बाबे दी बेर*(स्यालकोट) के सिखों के गुरद्वारे का संरक्षक, एक गैर सिख गंडा सिंहु को बना दिया । इसी गुरद्वारे का महंत हरनाम सिंघ शराब पीता था और गुरद्वारे में जायदाद बर्बाद करता था । इसने गुरद्वारे में गुंडे रख कर श्रद्धालुओं को पीटना भी शुरू कर दिया । इसके फलस्वरूप संगत ने इस महंत से गुरद्वारा आजाद करवाने के लिए आंदोलन चला दिया । इस लहर के नेता, सरदार जवाहर सिंघ को भी अकेले घेर कर गुरद्वारे में बहुत पीटा गया । इसके बाद झबालिए भाईयों, सरदार अमर सिंघ व सरदार जसवंत सिंघ पहुंच गए और फिर सरदार खड़क सिंघ जी ने संग्राम को और गर्म कर दिया और नौबत मुकदमे

तक पहुंच गई । अंततः सरकार को नेताओं के खिलाफ मुकदमे वापिस लेने पड़े और 5 अक्तूबर 1920 को 13 सदस्यों की कमेटी बनाई गई जिस ने गुरद्वारे का नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया । गंडा सिंहु को मैनेजर के पद से हटा दिया गया । इस विजय ने गुरद्वारा लहर को और चमकाया ।

पर सब से महत्वपूर्ण श्री दरबार साहिब का नियंत्रण था, जिस के बिना बाकी गुरद्वारों को नियंत्रित करना कठिन था । इसलिए सिखों का ध्यान दरबार साहिब के महंतों को हटाने की ओर खींचा गया । श्री दरबार साहिब के साथ महाराजा रणजीत सिंघ ने काफी जागीर लगाई थी और सिख राज्य के समाप्त होने पर यह जागीर अंग्रेजों के नियंत्रण में आ गई । अकाली आंदोलन के आरंभ के समय अंग्रेजों ने इस का प्रबंध अपने एक जी हजूरिए आनरेरी मैजिस्ट्रेट अरूड़ सिंघ नौशहिरा, नंगली को स्थापित किया था । धर्म व नैतिकता की दृष्टि से इस शिरोमणी गुरद्वारे की दशा बहुत दयनीय हो गई थी । दरबार साहिब तरन-तारन की दशा और भी बुरी थी ।

गुरद्वारा अमृतसर व तरन-तारन के दोनों संरक्षक, अरूड़ सिंघ के अधीन थे । सिंघ सभा, तरन तारन की रिपोर्ट में, तरन तारन की परिक्रमा में हो रहे दुराचार के बारे में इस प्रकार अंकित है :

"........मसिया का यह मेला पंजाब में पहले दर्जे के गदे मेलों में गिना जाता था । बाहर से आए लोग शराब पी कर परिक्रमा में आते, गुंडों व बदमाशों की टोलियां परिक्रमा में दौड़ लगातीं और गंद बकती फिरतीं, नाचने वालीयों के नाच होते, बेरों व लड्डुओं की झोलियां औरतों पर खाली होतीं । बिगड़े हुए युवक लाठियां कंधों पर रख के धौंस जमाते और छेड़खानियां करते फिरते, धक्के पड़ते, लड़ाइयां हो जातीं व कइयों के सिर खुल जाते । औरतों का अपमान होता, चोरियां होतीं । दर्शनी डयोढ़ी के आगे कंजरियों के मुजरे होते व रास पड़तीं ....।"

(जीवन भाई मोहन सिंघ वैद पृ 120)

लगभग इसी प्रकार की बुरी दशा दरबार साहिब अमृतसर में थी । मसिया तथा दीवाली के दिनों पर भांति-भांति के भ्रष्टाचार व दुराचार होते थे । श्रद्धालु सिख बहुत दुखी थे ।

अकाली अखबार के लेखों ने आम सिखों को अकाली जत्थे स्थापित करने में बहुत सहायता की और छोटी-बड़ी कृपाणें हर अकाली के कंधे पर

लटकने लग गई थीं । गांवों व शहरों में अकाली बनने को गर्व की बात समझा जाने लग गया । पर अभी न तो गुरद्वारों के सुधार के लिए ही कोई केंद्रीय संगठन बना था न जत्थों ने अपना कोई केंद्रीय दल ही स्थापित किया था । पर फिर भी अकाली बहुत अनुशासित थे और गुरद्वारा सुधार के लिए हर तरह की कुर्बानी करने के लिए तैयार थे । गुरद्वारों पर कब्जे शिरोमणी गुरद्वारा प्रबंधक कमेटी के अस्तित्व में आने से पूर्व ही शुरू हो गए थे ।

सिख पंथ के माथे पर सब से बड़ा कालिख का टीका लगाने वाली बात यह थी कि अरूड़ सिंघ अकाल तख्त तथा दरबार साहिब की ओर से देशी भक्तों के कातिलों को प्रशंसा पत्र दे रहा था । यहां तक कि मार्शल लॉ के दिनों में दरबार साहिब में से जनरल डायर को सिरोपा दिया गया । एक पुजारी ने यहां तक कहा था कि मैं कढ़ाह प्रशाद में तंबाकू मिला दूंगा ।

कई वर्षों से गुरद्वारों में से धर्म, सदाचार, नैतिकता, सभ्यता और हर एक मानवतावादी गुण का बराबर ह्रास हो रहा था । लोग इन में से जनसेवा की भावना, कुर्बानी के लिए उत्साह, रूहानी उल्लास व उच्च नैतिकता की शिक्षा ले कर नहीं जा पाते थे, बल्कि गंदे गीत, बदमाशी के दौर और औरतों से छेड़खानियां करने के ढंग सीख कर जाते थे । ग्रंथियों व पुजारियों की जुबान से यह बार-बार सुनाई देता था "लोगों की दुकानों की तरह यह दरबार साहिब हमारी दुकान है और यहां वे अपनी मर्जी का सौदा बेचते हैं ।" एक ग्रंथी के पुत्र ने तो यहां तक कहने की जुर्रत की कि "मैं औरतों का, यदि वे दरबार साहिब आएंगी तो उनकी बेइज्जती करूंगा । जिनको शर्म है, वे न भेजें।'[1]

महंतों व पुजारियों का सिख जनता के साथ व्यवहार बहुत बुरा था। वे सिंघ सभियों को *सिंघ सफइया* कह कर दुत्कारते थे। कछैहरों वाले व कृपाणधारी सिख को समाज का बागी समझते थे। धर्म स्थानों पर उनको मारते पीटते व अपमानित करते थे और उनकी कृपाणें तक उतार लेते थे । सरदार बहादुर, सरदार सुंदर सिंघ मजीठिया, जो सिंघ सभा लहर के संस्थापकों में से थे, जब अपने लड़के सरदार कृपाल सिंघ का विवाह करके प्रशाद भेंट करने को श्री हरिमंदर साहिब आए तो पुजारियों ने इन की अरदास न की क्योंकि उन्होंने अपने लड़के का गुरमत रीति के अनुसार अनंद विवाह किया था ।

---

1 आज भी हालात कुछ ऐसे ही हैं कि जो पराधर्मी सिख कोम को हर ओर से हानि पहुंचाने पर लगे हुए हैं उन को ही हमारे नेता गुरारों में बुला कर सम्मन देते हैं और अपनी वाह वाह करवा कर चौधर को पोशित करते हैं।

सिंघ सभा लहर ने बहुत से तथाकथित शूद्रों, रविदासियों व मज़हबियों को अमृतपान करवा कर सिंघ सजाया था । अमृतसर में इन की काफी संख्या थी । खालसा बिरादरी के नाम पर यह वार्षिक दीवान किया करते थे । सन 1920 के अक्तूबर की 11-12 तारीख को इन्होंने वार्षिक दीवान किया, जहां अमृत प्रचार भी हुआ । उपरांत नव-सृजित सिखों सहित यह कढ़ाह प्रशाद की देग ले कर हरिमंदर साहिब आए । इस समय खालसा कालेज अमृतसर के कई प्रोफैसर व विद्यार्थी भी इनके साथ थे । कुछ के नाम इस प्रकार हैं : प्रोफैसर तेजा सिंघ, बावा हरकिशन सिंघ और सरदार निरंजन सिंघ । जब पुजारियों ने अरदास न की तो सरदार करतार सिंघ (झब्बर), तेजा सिंघ भुच्चर आदि हथियार-बंद हो कर पहुंच गए और इस प्रकार जबर्दस्ती अरदास की गई। दरबार साहिब के पुजारी डरके मारे भाग गए और कब्जा अकालियों का हो गया। फिर सारी संगत अकाल तख्त साहिब गई और देखा गया कि वहां से भी पुजारी भाग गए थे । इस प्रकार अकाल तख्त साहिब का प्रबंध भी संगत ने अपने हाथ में ले लिया और 25 सदस्यों की कमेटी, भाई करतार सिंघ झब्बर की अगवाई में बनाई गई । गुरद्वारे का नया संरक्षक सरदार सुंदर सिंघ रामगढ़िया को नियुक्त किया गया । 12-13 अक्तूबर को डिप्टी कमिशनर ने संरक्षकों तथा कुछ नामी सिखों सहित 9 सदस्यों की प्रबंधक कमेटी बना दी और अकाल तख्त का कब्जा इस कमेटी के पास आ गया ।

अब वह समय भी आ गया था जब केंद्रीय संगठन की जरूरत को बहुत महसूस किया जा रहा था । इस आशय के लिए 15 नवंबर 1920 को समूह सिखों के प्रतिनिधियों का एक सम्मिलन जत्थेदार अकाल तख्त द्वारा अमृतसर में बुलाया गया । इस में शामिल होने का आमंत्रण पत्र, हर एक सिख संप्रदाय को भेजा गया ।

सरकार ने इस सम्मिलन को फेल करने के लिए महाराजा पटियाला के साथ मिल कर दो दिन पहले ही एक 36 मैंबरों की कमेटी बना दी । इस में कुछ सुधारवादी भी रखे गए पर अधिकतर सरकारी वफादारों की कमेटी ही थी । इस के दो मकसद थे - एक सिखों को संगठित होने से रोकना और दूसरे सिखों में फूट डाल कर जी-हजूरियों के द्वारा गुरद्वारों पर अपना कब्जा बनाए रखना । पर गुरद्वारा प्रबंधक कमेटी ने इस चालाकी को नाकाम कर दिया ।

15-16 नवंबर को दो दिन अकाल तख्त पर सम्मिलन हुआ । महासभा 175 सदस्यों की चुनी गई जिसका नाम शिरोमणी गुरद्वारा प्रबंधक कमेटी स्वीकार हुआ। इस में 36 वे सदस्य भी शामिल कर लिए गए जो सरकार ने मनोनीत किये थे । उस समय सरदार सुंदर सिंघ मजीठिया को इस कमेटी का प्रधान नियुक्त किया गया ।

1921 के आरंभ में ही सरदार तेजा सिंघ भुच्चर और सरदार करतार सिंघ झब्बर ने गुरद्वारा सुधार की लहर फिर तेज कर दी । शिरोमणी गुरद्वारा प्रबंधक कमेटी के नाम पर यह लहर चलाई गई । इस का लक्ष्य तमाम सिख गुरद्वारों और धार्मिक संस्थाओं का नियंत्रण अपने हाथ में लेना था और प्रमाणित पदचिन्हों पर उनका प्रबंध करना था । शिरोमणी कमेटी के बन जाने से सिखों की छिन्न-भिन्न हुई शक्ति एकमुठ व मजबूत हो गई और इस कमेटी के फैसले माने जाने लगे और इन पर अमल होने लगा ।

शिरोमणी गुरद्वारा प्रबंधक कमेटी की विशेषता व हैसीयत सिख धार्मिक संगठन की थी और इसका कार्यक्षेत्र गुरद्वारों का सुधार व सिखों की धार्मिक, नैतिक और सभ्यता के स्तर को ऊंचा उठाने तक सीमित था । राजनीतिक मामले इसके दायरे से बाहर थे ।

गुरद्वारा रकाब गंज के मोर्चे के समय जिस शहीदी जत्थे की भर्ती अमर सिंघ झबाल ने आरंभ की थी उसे जारी रखा गया और जसवंत सिंघ झबाल तेजा सिंघ भुच्चर व अन्य अकालियों ने ननकाणा साहिब पर कब्जा करने के लिए भी भर्ती जारी रखी । फिर यह भर्ती सभी जगह पर शुरू हो गई । 24 जनवरी 1921 को जत्थों के प्रतिनिधियों की अमृतसर श्री अकाल तख्त साहिब पर बैठक हुई जिस में राजनीतिक मामलों के बारे में केंद्रीय संगठन को स्वीकार किया गया और इस का नाम शिरोमणी अकाली दल रखा गया । इस के पहले प्रधान सरदार सरमुख सिंघ जी चुने गए ।

सरदार सुंदर सिंघ मजीठिया को पंजाब सरकार की एग्ज़ीक्यूटिव कौंसल का मैंबर बना दिया गया और उन्होंने शिरोमणी गुरद्वारा प्रबंधक कमेटी की प्रधानगी से त्याग पत्र दे दिया । इसके पश्चात सरदार खड़क सिंघ जी को प्रधान बनाया गया ।

1921 का वर्ष बहुत खूनी कांडों व घमासान संग्रामों का वर्ष था । इस में एक ओर अंग्रेज अधिकारियों ने गुरद्वारों की स्वतंत्रता के संग्राम को कुचलने

का भन बना लिया था, दूसरी ओर शिरोमणी कमेटी की अगवाई में सिखों ने गुरद्वारा प्रबंध सुधारने के लिए कमर कस ली थी ।

18 दिसंबर 1920 को अमर सिंघ झबाल व करतार सिंघ झब्बर ने पोठोहार के मशहूर गुरद्वारा पंजाब साहिब पर कब्जा कर लिया और इसे एक प्रबंधक कमेटी के प्रबंध में ले आए ।

इसी प्रकार तरन तारन साहिब के गुरद्वारे की आज़ादी के लिए 26 जनवरी 1921 को 40 सिखों का जत्थ अमृतसर से चला । रात के कोई नौ बजे के करीब शराबी पुजारी टोला शांतिपूर्ण अकाली जत्थे पर टूट पड़ा । सिखों को घावों पर घाव लगे । अगले दिन भाई हजारा सिंघ और भाई हुकम सिंघ वसाऊ कोट(गुरदासपुर) वाले का देहांत हो गया । गुरद्वारों को आजाद करवाने की लहर में यह सब से पहली दो शहीदियां थीं । इसके साथ ही और अकाली जत्थों के पहुंचने पर गुरद्वारे पर कब्जा कर लिया गया । इसके पश्चात नौरंगाबाद और खडूर साहिब के गुरद्वारों पर भी शिरोमणी कमेटी ने जत्थे भेज कर अधिकार कर लिया ।

ननकाणा साहिब का कत्लेआम

ये थे, सारे हालात जिस समय नानकाणा साहिब का कांड हुआ । अब हम ननकाणा साहिब के कत्लेआम का विवरण देने का यत्न करेंगे । इस गुरद्वारे का महंत नारायण दास था और इस से पूर्व दोनों महंत शराबी होने के कारण कई गुप्त बीमारियों के शिकार होने से मर गए थे । ननकाणा साहिब धर्म स्थान नहीं था रहा । यह गुंडों, बदमाशों व भांग-पोस्तियों का पोषण केंद्र बन गया था । जिस प्रकार आज कुछ लोग यह चाहते हैं कि गुरद्वारे को सिख जागृति का केंद्र न बनने दिया जाय और जितने जाहिल, अनपढ़, कुकर्मी व दुर्व्यसनी सिख लीडर होंगे उतना ही इनको अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए प्रयोग किया जा सकता है । बिल्कुल यही दशा उस समय ब्रिटिश सरकार की थी ।

हालांकि महंत नारायण दास ने गद्दी पर बैठते समय अंग्रेज मैजिस्ट्रेट के सामने सिख संगत के साथ वचन किये थे कि वह अपने पूर्व महंत वाली कुचालें व कुकर्म छोड़ देगा । पर यह पहले महंत से भी आगे निकल गया । इसने पहले एक मिरासिन को घर में डाल लिया, फिर लाहौर से वेश्याएं मंगवाईं । उनके नाच मुजरे जन्म स्थान पर करवाए । महंत की इस हरकत ने सिख संसार में उसके विरुद्ध गुस्से की ज्वाला भड़क उठी । अखबारों, सिंघ सभाओं व संगत ने इस अनादर व अनैतिक करतूत के विरुद्ध प्रस्ताव पास किए । सरकार को भी इस बारे में सूचित किया गया पर वह भी चुप साधे रही। 1918 में सिंध से आए एक यात्री की लड़की की आबरू लूटी गई । इसी साल 6 नारियों की, जो पूर्णमासी के अवसर पर दर्शनार्थ आई थीं, जन्म स्थान के अंदर ही रात्रि के समय, पुजारियों ने जबर्दस्ती इज्जत लूटी । इस प्रकार के अन्य सैंकड़े कुकर्म किये गए ।

अक्तूबर 1920 में धारोवाल नगर में भारी दीवान हुआ और महंत को अपना सुधार करने के लिए कहा गया । पर महंत नरायण दास तो एक नर्की मसंद बन चुका था । गुरद्वारा ननकाण साहिब के साथ एक लाख से अधिक

सालाना की जागीर लगी थी । इसके अतिरिक्त चढ़ावा व पूजा का धान, बे-हिसाब आता था । कुछ बेदी जाति के जागीरदार उस की पीठ पर थे । महंत ने सिख पंथ का सामना करने की ठान ली । बदमाशों, गुंडों व मारखोरों को शराबें व वेतन दे कर गुरद्वारे क़े अंदर रख लिया और जन्म स्थान को जंगी किला बनाने का सामान एकत्र कर लिया । बाबा करतार सिंघ बेदी, सरकारी अफसरों के साथ प्रगाढ़ संबंध रखने वाले अन्य व्यक्ति, उसके सलाहकार बन गए । उसने रांझा, रिहाणा जैसे दस नंबरी बदमाश व क्षेत्र के एक इस्माईल भट्टी को हाथ में ले कर मुसलमानों को अपने साथ गांठ लिया गया ।

दूसरी ओर इन बदमाशों को हथियारबंद करने के लिए जन्म स्थान में छंविएं, कुल्हाड़े, टकुए आदि हथियार बनाने के लिए भट्ठियां चालू कर दी गई । लाहौर से बंदूकें, पिस्तौलें व अन्य असला मंगवा लिया गया । मिट्टी के तेल के कनस्तर रखे गए, पत्थरों के ढेर छत पर लगवाए गए । फाटक मजबूत करवाए गए और स्थान-स्थान पर सुराख रखकर बंदूकें चलाने के लिए प्रबंध किया गया ।

फिर दुष्प्रचार के लिए उसने ननकाणा साहिब में साधुओं व महंतों की एक बैठक बुलाई गई । इस में कोई 60-65 साधु और महंत एकत्र हुए । इनकी बैठक में शिरोमणी कमेटी को मान्यता देने से इनकार करके साधुओं व महंतों की अपनी कमेटी कायम की गई । *संत सेवक* नाम का एक अखबार निकालने का निर्णय किया गया । कमेटी का प्रधान नारायण दास, ननकाणा साहिब व सैक्रेटरी महंत बसंत दास गुरद्वारा *माणिक* नियुक्त किए गए ।

नवंबर में गुरु नानक देव जी के प्रकाश दिवस से चार पांच दिन पूर्व, महंत ने गुरद्वारा जन्म स्थान में हथियारों से लैस कोई चार सौ अच्छे पेशेवर लड़ाकू इकट्ठे कर लिए गए और आदेश दे दिया कि किसी कृपाण वाले सिख को गुरद्वारे में घुसने न दिया जाए । भाई लछमण सिंघ धारोवाल, बार में, माना हुआ पंथ दर्दी थी । वह अपने गांव के लोगों के साथ गुरद्वारे के दर्शनार्थ आया। उस को महंत के कातिलाना इरादों का कोई पता नहीं था । देवनेत से उस दिन डिप्टी कमिश्नर व सी आई डी के सुपरिंटेंडेंट भी गुरद्वारे में उपस्थित थे । इसलिए भाई लछमण सिंघ जी उस दिन जत्थे सहित बच गए । पर इन अधि कारियों द्वारा, महंत को कानून को हाथ में लेने और अकालियों के कत्ल के इरादे रखने की कोई प्रताड़ना न करना, बहुत अर्थ भरपूर था ।

गुरद्वारा जन्म स्थान, ननकाणा साहिब के महंत नारायण दास के दुराचरण व उस की कई अन्य करतूतों की चर्चा सारे पंथ में फैली हुई थी और यहां के प्रबंध को पंथक हाथों में लाने के लिए सब की बहुत तीव्र इच्छा थी । महंत के साथ समझौते की बातचीत भी होती रही, जिसमें जत्थेदार करतार सिंघ झब्बर व सरदार बूटा सिंघ वकील, शेखुपुरे का काफी योगदान था । परंतु महंत, अंदरखाते लाला लाजपत राय व कई और उदासी महंतों के साथ गठजोड़ करने के लिए हर बार टाल-मटोल करता चला गया । शिरोमणी कमेटी ने इस बात-चीत को सिरे चढ़ाने के लिए ननकाणा साहिब में 5-6 मार्च 1921 को पंथक मुखियों व कुछ कौमी लीडरों को एकत्र किया । भले ही यह कार्यक्रम महंत की सलाह से ही बना था, परंतु महंत अपने निजी सलाहकार के परामर्श से अंदरखाते और ही मनसूबे पका रहा था जिस में उस को सरकारी अधिकारियों, खास कर लाहौर के कमिश्नर मिस्टर किंग की भी बड़ी शह थी। मिस्टर किंग ने एक परिपत्र जारी करके महंतों का उत्साह बढ़ाया था कि सरकार महंतों की हर प्रकार से रक्षा करेगी । मिस्टर किंग की एक और गुप्त चिट्ठी दिनांक 18-12-1920 के द्वारा भी इस बात की पुष्टि हो जाती है (जिसकी प्रति इंडिया हाउस लंदन की लायब्रेरी में पड़ी हुई है ।) जो कि लाहौर के आर्मस डीलर को लिखी गई थी जिसका आशय यह था कि महंत नरैण दास को असला बंदूकें आदि दिए जाएं । महंत की मंशा थी कि 5-6 मार्च को जब पंथक मुखी व लीडर एकत्र हों, बाहर से बदमाशों से हमला करवा कर नई उठ रही गुरद्वारा सुधार लहर के सारे मुखियों को मरवा दे और स्वयं पीछे हट कर इसका सारा दोश बदमाशों पर मढ़ दे । इस काम के लिए महंत ने बहुत से बदमाश, विशेष कर लाहौर के मझैलों में से और 18 पठान स्थाई तौर पर अपने पास रखे हुए थे ।

दूसरी ओर क्षेत्र के स्थानीय जत्थे, बार खालसा दीवान जिस में लायलपुर सांगला आदि की नवीन आबादियों के सिख शामिल थे और अकाली दल *खरा सौदा* बार, जो अधिकांश जिला शेखुपुरा व गुजरांवाला आदि के वासी, विर्क सिखों का जत्था था(जिस की स्थापना 24-12-1920 को हुई) और जिसके पहले जत्थेदार भाई करतार सिंघ झब्बर थे) यह चाहते थे कि ननकाणा साहिब को पंथक हाथों में लाने का सेहरा उनके सिर हो । इस के साथ ही 6 मार्च, 1921 के समारोह के लिए संगत के लंगर के प्रबंध के लिए भाई लछमण सिंघ

धारोवाल, सरदार दलीप सिंघ सांगला, सरदार तेजा सिंघ समुंदरी, सरदार करतार सिंघ झब्बर और सरदार बख्शीश सिंघ की कमेटी कायम की गई । इस कमेटी को आटा, दाना, रुपया एकत्र करने और दीवान के लंगर व अन्य संबंधित वस्तुओं का प्रबंध करने का काम सौंपा गया ।

महंत को लगभग सब बदी जागीरदारों की हिमायत प्राप्त थी । सरदार सुंदर सिंघ मजीठिया पहले ही सरकार का ज़रखरीद था और पंजाब कौंसल में माल मंत्री था । चीफ खालसा दीवान सरकार पक्षीय होने के कारण बदनाम हो चुका था । केवल उसके दो सदस्य, शिरोमणी कमेटी के साथ नत्थी हुए पड़े थे - सरदार हरबंस सिंघ(अटारी) और प्रो जोध सिंघ । महंत ने महाराजा पटियाला से भी सहायता मांगी पर बात बनी नहीं ।

महंत बहुत चतुर था और साजिशें रचने में शातिर था । एक ओर वह सिख नेताओं को मार-मिटाने के षड्यंत्र रच रहा था और दूसरी ओर सिख नेताओं के साथ समझौते की बातें चलाई जा रही थीं । यह सुलह की बैठक 15-12-1920 को शेखुपुरे, सरदार बूटा सिंघ वकील की कोठी पर होनी थी परंतु वहां महंत का संदेश पहुंचा कि यह बात 15-12-1920 को लाहौर आ कर की जाए । परंतु यहां पर भी महंत न आया और संदेश भेजा । इस समय झब्बर जी का गुप्तचर सरदार वरियाम सिंघ, भेजिआ गांव, जिला मिंटगुमरी (जो सरदार उत्तम सिंघ के कारखाने में मुंशी था और ननकाणा साहिब महंत की कारवाई की खबर झब्बर साहिब को पहुंचाना था - और नारायण दास के साथ ही रहता था) आया, उस ने बताया कि कल रात को महंत ने अपनी ामगली वाले मकान में एक गुप्त बैठक की थी जिस में थंम्मन का महंत अरजन दास, बघिआ वाले का जगन नाथ और मानक गुरद्वारे का बसंत दास व चार पांच माझा के जाट शामिल थे । नरायण दास ने माझा के बदमाशों को डेढ लाख रुपया भाड़ा देना किया था । वह माझा के भगौड़े कातिल साथ ले कर 6 मार्च को ननकाण साहिब पहुंचेंगे । जिस समय पंथक मुखियों का समारोह हो रहा होगा ये अचानक हल्ला करके उन पर टूट पड़ेंगे और सब को मार कर, घोड़े भगा कर् भाग जाएंगे । महंत व उस के आदमी 'पकड़ लो, पकड़ लो, मार गए' कहते हुए उनका पीछा करेंगे ।

इस रिपोर्ट ने झब्बर जी व उनके साथियों की आंखें खोल दीं । झब्बर जी ने अपने मुखी साथियों के साथ सलाह करके फैसला किया कि 19-20

फरवरी को जब लाहौर में सनातन सिख कान्फ्रेंस के अवसर पर जहां महंत नरायण दास ने भी हिस्सा लेना है, गुरद्वारा जन्म स्थान पर कब्जा कर लेना चाहिए । बीर ख्वालसा दीवान के मुखी भाई लछमण सिंघ, टहिल सिंघ आदि लायलपुर से भाई बूटा सिंघ चक नं 204 और संत तेजा सिंघ की सलाह से यह फैसला हुआ कि 20 फरवरी 1921 को 4-5 हजार का जत्था ले कर ननकाणा साहिब पहुंचा जाए । भाई लछमण सिंघ जी के जत्थे ने धारोवाल से चलकर झब्बर के जत्थे को ननकाणा साहिब से पांच मील की दूरी पर चंदर कोट की झाल(झरना-नुमा जल स्त्रोत) पर मिलना था और लायलपुर से आए सिखों ने इन को 20 फरवरी को सुबह 4 बजे ननकाणा साहिब के समीप ईट के भट्ठों पर मिल कर गुरद्वारा जन्म स्थान पांच बजे सुबह पहुंचना था ।

ये चाहते थे कि यह कार्यक्रम शिरोमणी कमेटी से गुप्त ही रखा जाए क्योंकि 6 मार्च वाले सम्मिलन के सम्मुख, कमेटी ने इन को ऐसा करने की आज्ञा नहीं देनी थी । परंतु किसी तरह मास्टर तारा सिंघ व सरदार तेजा सिंघ समुंदरी को जो लायलपुर गए हुए थे, इस कार्यक्रम का पता चल गया । उन्होंने 19 फरवरी को सुबह पांच बजे चूहड़काणे से निकलते हुए, सरदार सुच्चा सिंघ जो चक वाले के हाथों, झब्बर को जत्था न ले जाने का संदेश भेजा और फिर लाहौर पहुंच कर वहां से इस काम के लिए भाई दलीप सिंघ जी व सरदार जसवंत सिंघ झबाल को चूहड़काणे भेजा । इस समय तक विरकत के बहुत से सिख वहां पहुंच चुके थे । संत तेजा सिंघ भी लायलपुर से 60 सिखों सहित पहुंच गए थे । जत्था शाम ढलते ही, ननकाणा साहिब को, जो यहां से 15 कोस पर है, कूच करने को तैयार था कि भाई दलीप सिंघ जी पहुंच गए । लंबी विचार के पश्चात संत तेजा सिंघ जी ने कहा, 'झब्बर साहिब यदि आप शिरोमणी पंथक जत्थेबंदी के आदेश का उल्लंघन करके ननकाणा साहिब ले गए तो आप पंथ तथा गुरु के देनदार होंगे ।' झब्बर ने कहा कि आपस में हुए फैसले के अनुसार यदि लछमण सिंघ जी या अन्य नननकाणा साहिब पहुंच गए तो जो नुक्सान हुआ, उसका कौन जिम्मेवार होगा, भाई दलीप सिंघ ने उनको रोकने की अपनी जिम्मेवारी ले ली । अंततः एक पत्र लिखा गया, जिस पर भाई दलीप सिंघ, सरदार जसवंत सिंघ झबाल आदि 6 सिखों ने हस्ताक्षर किये और चार घुड़ सवार, जिन में एक भाई दलीप सिंध थे, जत्थेदार लछमण सिंघ के जत्थे को रोकने के लिए चल पड़े । ये चंदर कोट और उस से आगे

कई स्थानों पर सारी रात जत्थे की खोज में फिरते रहे । जो इक्का-दुक्का सिख जत्थे गए उनको ननकाणा साहिब जाने से रोका गया परंतु भाई लछमण सिंघ जी का जत्था इन को न मिल पाया ।

अमृत बेला में चार बजे के करीब ये ननकाणा साहिब के पास पहुंच गए। यहां पर भी जत्थे के आने के कोई लक्षण नहीं थे । अंततः भाई दलीप सिंघ सरदार उत्तम सिंघ जी के कारखाने गए और मुंशी वरियाम सिंघ को वह चिट्ठी दी और जत्थे की खोज करने के लिए ननकाणा साहिब की राह पर खोजियों को भेजा ।

भाई लछमण सिंघ जी व भाई टहिल सिंघ जी का जत्था अपने गांव से 19 फरवरी को चल पड़ा था । इस जत्थे के सिखों ने गुरद्वारा ननकाणा साहिब की सेवा के लिए सिर दे देने का प्रण ले लिया था । इस में तीन सिख महिलाएं भी थीं, जिन में भाई लछमण सिंघ की धर्मपत्नी भी थी । यह जत्था रास्ते में नजामपुर, देवा सिंघ वाला, धंनूवाल चेलावाल, ठोठीआं, मूल सिंघ वाला आदि गांवों में से होते हुए मोहलण में, जो ननकाणा साहिब से केवल 6 मील दूर है, पहुंच गया । यहां पहुंचने तक इस में 150 सिख शामिल हो गए ।[1]

ये, चंदर कोट से झब्बर के जत्थे की खबर आने से पूर्व ही चल पड़े थे और यह ठान रखी थी कि यदि हम शुभ कर्म हेतु आए ही हैं तो ढील करना ठीक नहीं है और ननकाणा साहिब के जन्म स्थान की ओर चल पड़े । भाई लछमण सिंघ जत्थेदार ने कोट दरबार की *जूह* यानी सुनसान जंगली स्थान पर जत्थे को रोक कर सारे सिखों से हाथ न उठाने और शांतिपूर्ण रहते हुए शहीदी प्राप्त करने का प्रण लिया । यहां से आगे बढ़कर जब जत्था गुरद्वारा जन्म स्थान से लगभग आधा मील पर, भट्ठों वाले स्थान पर पहुंचा तो जत्थेदार जी (लछमण सिंघ जी) ने अपनी पत्नी बीबी इंदर कौर और दो अन्य स्त्रियों को भाई हाकम सिंघ के साथ गुरद्वारा तंबू साहिब की ओर भेज दिया । इसी समय भाई टहिल सिंघ ने अपनी जेब में से 18 रुपए भी इंदर कौर को देते हुए कहा

---

1 कुछ इतिहासकारों(जैसे कि सरदार सोहन सिंघ जोश - *अकाली मोरचियां दा इतिहास*) ने लिखा है कि ननकाणा साहिब से बाहर भट्ठों पर सरदार दलीप सिंघ का संदेश सरदार लछमण सिंघ को मिल गया और वह वापिस जाने को राजी हो गया क्योंकि इन का भाई दलीप सिंघ के साथ बहुत आदर सम्मान था । पर सरदार टहिल सिंघ जी ने कहा कि आज श्री गुरू हरि राय साहिब का प्रकाश दिवस है और हम केवल मथा टेक कर वापिस चले जाएंगे । पर उनको महंत के शैतान मनसूबों का पता नहीं था ।

कि आप जैसी बहनें उनकी शहीदी के पश्चात श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ करवा देंगी ।

जत्थेदार ने संक्षेप में अरदास की :*'गुरु नानक, तेरे दर के कूकर तेरे दर्शनों को आए हैं कि तेरे दरबार में हो रही कुरीतियों को अपने लहू से धोने की ठानी है । तू बल प्रदान कर कि हम अपने इरादे में सफल हों ।'*

जत्था आगे बढ़ने ही लगा था कि भाई वरियाम सिंघ जी *भेजीयां वाले* जो जत्थे की खोज में घूम रहे थे, यहां पहुंच गए और भाई लछमण सिंघ जी को शिरोमणी गुरद्वारा कमेटी के फैसले के अनुसार सच्चे सौदे से सिखों के हस्ताक्षरों वाली चिट्ठी दी और अन्य सारे जत्थों के रुक जाने की सूचना दी । इस बात ने जत्थे के सिखों को एक अजीब तरह के धर्मसंकट में डाल दिया और उन्होंने नये हालात पर विचार करनी शुरू कर दी । पर भाई टहिल सिंघ जी ने कहा कि खालसा जी, अब सोचने का समय नहीं है । हमने अपने जीवन, गुरद्वारा साहिब की खातिर न्यौछावर करने का संकल्प ले लिया है, यही इरादा ठान कर घरों से चले थे कि हमने ननकाणा साहिब को आजाद करवाना है या शहीद होना है और यही अरदास आपने अभी की है । अपने किये वचनों से वापिस हो जाना शूरवीरों का काम नहीं । मैं वापिस नहीं जाऊंगा, कोई मेरे साथ चले या न, मैं तो सीधा गुरद्वारे जाऊंगा ।' ऐसा कहते हुए भी टहिल सिंघ जी गुरद्वारा जन्म स्थान की ओर चल पड़े । फिर कौन था जो पीछे हटता , चौ पाल सिंघ जो बुचिआणे की ओर से कई जत्थों को मोड़ते हुए ठीक इसी समय यहां पर पहुंचे थे, ने दौड़ कर भाई लछमण सिंघ को कौली भर के, उनको रोकने की कोशिश की परंतु वे जत्थेदार जी को रोक न सके ।

महंत नरायण दास, जो 'लाहौर सनातन सिख कान्फ्रेंस' में जाने वाला था, 19 फरवरी को शाम 3.44 बजे की गाड़ी पर सवार था । गाड़ी चलने से पूर्व ही किसी मुसलमान चूहड़ी ने उसको जा खबर की कि जत्था बुच्रिआणा आ गया है और सारी रात उसने तैयारी में बिताई । उसने पहले ही अपने परिवार के सदस्य लाहौर भेज दिए थे । रुपया पैसा व जरूरी कागजात भी लाहौर भेज दिए थे । यहां तक कि उसने कसूर के थाने में दस नंबरिए बदमाशों -रीहाना,

अमल, कुंदी, वसाखा आदि की कुछ दूसरे स्थानों पर हाजरियां लगवाने का बंदोबस्त भी कर दिया था ताकि वह अपनी पोजीशन साफ करने के लिए सफाई पेश कर सकें कि जिन बदमाशों को कातिल कहा जा रहा है, वे तो उस दिन ननकाणा साहिब में उपस्थित ही नहीं थे ।

अकालियों ने जन्म स्थान के बाहर तालाब पर स्नान किया और कोई 5-45 और 6 बजे के करीब सारे सिख गुरद्वारे में दाखिल हुए । महंत के गुडे और बदमाश आगे ही तैयार बैठे थे ।

अंदर पहुंचते ही माथा टेक कर जत्थेदार लछमण सिंघ जी ने जत्थे के सारे सिखों को जगह-जगह पर ड्यूटियां सौंप दीं और स्वयं कुछ सिखों सहित गुरद्वारे की चौखंडी(प्रकाश स्थान) में दाखिल हो गए । भाई लछमण सिंघ जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब की ताबिया (यानी आसन की सेवा में) और बाकी सिंघ नीचे बैठ गए और आसा की वार का कीर्तन आरंभ कर दिया । महंत नरायण दास अपने दक्षिण की गुठ वाले मकान(महिमान खाने) के चुबारे में से इस सारे दृश्य को देख रहा था । उसने अपने आदमियों - रांझा, रिहाणा, माछी और पठानों को पूर्व निश्चित कारवाई करने का आदेश दे दिया ।

गुरद्वारे के अंदर, संगत में जो साधु आदि बैठे थे वे धीरे से खिसक लिए। गेट बंद कर दिए गए । एकदम अहाता जन्म स्थान के दक्षिण की नुक्कड़ के कमरों से गोलियां बरसने लग गईं । मिनटों में ही वे सारे सिख जो चौखंडी के बाहर थे और छतों से गोली का निशाना बन सकते थे, अलग-थलग कर दिए गए । भाई टहिल सिंघ भी जो दक्षिणी दरवाजे पर ड्यूटी दे रहे थे, शहीद हो गए । उपरांत महंत के आदमी बंदूकें, बरछे, गंडासे लिए अंदर को नीचे उतरे और चौखंडी के पश्चिमी दरवाजे के रास्ते गोलियां मार-मार कर अंदर बैठे सारे सिखों को घायल व शहीद कर दिया । कई गोलियां श्री गुरू ग्रंथ साहिब में से निकल कर सामने वाली दीवार से टकराती रहीं जिन के निशान आज तक मौजूद हैं । घायल व शहीद हुए सिखों के खून के फव्वारे अंदर से बाहर को चल रहे थे ।

गुरद्वारा जन्म स्थान के अंदर लगातार गोली चलने की आवाजें दूर-दूर

तक सुनी जा रही थीं । भाई दलीप सिंघ भाई वरियाम सिंघ, जत्थेदार बूटा सिंघ चक नंबर 204 पर सरदार उत्तम सिंघ के कारखाने बैठे थे । उत्तम सिंघ ने गोली की ये आवाजें सुनीं । सुनते ही भाई दलीप सिंघ व भाई वरियाम सिंघ जी गुरद्वारे की ओर उठ भागे । भाई वरियाम सिंघ जी लछमण सिंघ के जत्थे को वापिस मोड़ने में असफल होने के पश्चात् भाई दलीप सिंघ को यह बात बताने के लिए उसी समय ही कारखाने पहुंचे थे और अभी अपनी बात बता ही रहे थे कि गोली चलने की आवाज इनके कानों में पड़ी)।

भले ही सरदार उत्तम सिंघ ने इन को बहुत रोका, पर इन्होंने एक न सुनी । भाई दलीप सिंघ के मन की दशा बताना बहुत कठिन है क्योंकि उन्होंने खरे सौदे में वचन दिया था कि वे भाई लछमण सिंघ जी के जत्थे को रोक लेंगे । भाई दलीप सिंघ बचने के लिए एक मील की दूरी से सरदार वरियाम सिंघ सहित भागे । महंत आप को अच्छी तरह जानता था और आपका सम्मान भी करता था । पर जब दोनों दर्शनी दरवाजे के सामने पहुंचे तो उस समय महंत की चंडाल चौकड़ी का बाहर से आए नये सिखों पर हमला जारी था और सिखों को अंधाधुंध दाएं-बाएं कत्ल किया जा रहा था । भाई जी ने हाथ जोड़ कर महंत को कहा, *'न करो कत्ल, बंद करो कत्लेआम, मैं आज भी आपको पंथ से क्षमा करवा दूंगा ।''* पर वहां पर तो महंत अंधा हुआ पड़ा था। उसने भाई दलीप सिंघ को पिस्तोल की गोली से शहीद कर दिया । महंत के लोगों ने सरदार वरियाम सिंघ के भी टुकड़े कर दिए । इन दोनों सिखों के शरीरों को और 5-6 सिखों को, हाथ लगते ही कुम्हारों की भट्ठियों में झोंक दिया गया ।

चौखंडी के अंदर कुछ सिख शहीद कर दिए गए । जो कुछ घायल पड़े थे, उनको टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया । लगभग 25 सिख कमरों में चले गए वहां पर महंत के गुंडों ने गोलियों, टकुए, लाठियों और इंटें मार-मार कर पार बुलाया । इस समय बाहर से सिखों के जयकारे छोड़ने की आवाज आई । इन गुंडों व बदमाशों ने उन पर हमला करने के लिए दर्शनी बजार गेट खोल दिये और टूट कर उन पर जा झपटे । उन्होंने सिखों को शहीद कर दिया । महंत

स्वयं इस कत्लेआम की अगुवाई कर रहा था । उसने मुंह पर चद्दर लपेटी हुई थी और घोड़े पर चढ़ा हुआ कभी इधर जाता था और कभी उधर । वह ऊंचे ऊंचे कह रहा था, 'कोई केशों वाला सिख जिंदा न रहने दो ।' दो तीन सिख खेतों में जा कर शहीद कर दिए गए । रेलवे लाइनों तक जो सिख नजर आया शहीद कर दिया गया । कहा जाता है कि 2 सालों का लड़का जो चौखंड में एक बड़ी खुली दीवार वाली अल्मारी में छिपा था, बच गया । यह लड़का जरग (जिला पटियाला) निवासी शहीद केहर सिंघ का पुत्र था और पिता के साथ जत्थे में शामिल था । इस को अल्मारी में से बाहर निकाल कर जलती हुई आग में झोंक दिया गया ।

जिस समय सारे सिख शहीद अथवा घायल हो गए तब महंत ने आदेश दिया कि सारी लोथों को एकत्र करके केवल चार लोथें रहने दो, बाकी को मिट्टी का तेल डाल कर जला दो । इन में से एक सरदार मंगल सिंघ मजहबी सिख था जो भाई लछमण सिंघ का पुत्र बना हुआ था । एक साधु भी था जो किसी बदमाश की गोली से मारा गया था । इस प्रकार घायलों के व लोगों के तीन चार ढेर बनाए गए और आग लगा कर जलाए गए । एक सिख, जो शायद भाई लछमण सिंघ जी थे, को कीकर की झाड़ी से बांध कर जला दिया गया । तारों से लिपटा कर बंधा हुआ अधजला जंड (कांटेदार झाड़ी) बाद में सिखों ने आंखों से देखा । यह जंड आज भी वहां पर है । इसके बाद महंत घोड़े पर सवार हो कर कुछ साथियों सहित शहर की ओर चला गया और जो भी सिख नजर आया उसे उसने कत्ल कर दिया ।

कत्लेआम की सूचना की अच्छी तरह पुष्टि हो जाने पर डिस्ट्रिक्ट इंजीनियर सरदार एन एस संधु ने अपना एक खास आदमी 3.15 बजे घोड़े पर, डिप्टी कमिश्नर *करी* की ओर भेजा ताकि वह स्वयं मौका वारदात पर आकर, इस भयानक कांड को अपनी आंखों से देख ले । डी सी का मुकाम ननकाणा साहिब से 12 मील दूर था । उधर सरदार उत्तम सिंघ ने कोई 9.15 बजे के करीब सरदार करम सिंघ, स्टेशन मास्टर के द्वारा तारें देकर यह सूचना पंजाब के गवर्नर, कमिश्नर, डीसी और सुपरिंटेंडेंट को भेजीं और साथ ही सारे सिख

केंद्रों, खास कर शिरोमणी कमेटी को सूचनाएं पहुंचा दीं । सारे सिख संसार में हाहाकार मच गई ।

डी सी करी ननकाणा साहिब 12.30 बजे दुपैहर के बाद पहुंचा और अकेला ही महंत के साथ अंदर गया । फिर उसने सेनाबल भेजने के लिए बड़े अधिकारियों को तारें दे दीं । एक पुलिस का सब इंस्पेक्टर दो बजे पहुंचा और उस के बाद आग को बुझाया गया । ऐसा प्रतीत होता है कि डी सी के पहुंचने के पश्चात भी घायलों को ढूंड-ढूंड कर मारा जा रहा था ताकि कोई मौके का गवाह न रहे ।

इस कांड के तुरंत बाद ननकाणा साहिब को जाने वाले सभी रास्ते बंद कर दिए । रात को लगभग सवा नौ बजे लाहौर से कमिश्नर किंग और डी आई जी पुलिस, एक विशेष रेलगाड़ी में पहुंचे । उनके साथ 200 फौजी भी थे । उसके पश्चात महंत नरायण दास, उसके दो पिट्ठू और 26 पठान पकड़ कर उसने स्पैशल रेलगाड़ी में लाहौर भेजे गए । इस दौरान अन्य बदमाश भाग दौड़ गए । गुरद्वारा जन्म स्थान व सरकार ने कब्जा कर लिया और गुरद्वारे को ताले लगा दिए गए ।

20 से 21 फरवरी को कुछ सिख नेता ननकाणा साहिब पहुंच गए । सरदार महिताब सिंघ तो 20 तारीख को ही सेना की गाड़ी में रात को पहुंच गए थे । 21 फरवरी को अन्य सिख नेता व डाक्टर कारों में पहुंचे । इन में सरदार सुंदर सिंघ रामगढ़िया और सरदार हरबंस सिंघ अटारी भी थे । 21 तारीख को सुबह 8 बजे जांच पड़ताल का काम शुरू हुआ । सारे गुरद्वारे में, आंगन के अंदर, अलग अलग ढेर, लाशों के लगे पड़े थे । एक साधु की लाश निचली परिक्रमा में पड़ी थी । 36 खोपड़ियां ढेरों के अतिरिक्त पड़ी थीं और बाहर भट्ठे में से छः कड(सिख कंगन) निकले । कुल मिलाकर कोई 150 सिख अंदर शहीद हुए थे । इनमें से 86 के नाम ही मिल सके । गुरद्वारे से बाहर भी सिख शहीद किये गए थे ।

उधर 20 फरवरी को सुबह 11 बजे श्री ननकाणा साहिब से आई तारों से, गुरद्वारा खरा सौदा चूहड़काणे में जत्थेदार करतार सिंघ झब्बर को जन्म स्थान

में हुए कांड की सूचना मिल चुकी थी । इस समय खरे सौदे वाले स्थान पर 80-90 सिख उपस्थित थे । इन्होंने अरदास करके ननकाणा साहिब के कब्जे के लिए कूच कर दिया । लगभग 40 सिख घोड़ों पर दौड़ाए गए और यह समाचार देते हुए गांव-गांव में सिख घूम गए और स्थान-स्थान से सिंघ शहीदियां व बलिदान देने के लिए चल पड़े । इसके साथ ही जहां कहीं भी इस कांड की खबर पहुंची वहीं पर से सिख समुदाय और खास कर अकाली, ननकाणा साहिब के शहीदों के दर्शनों के लिए भाग उठे । 20 फरवरी की रात्रि के ग्यारह बजे तक पंद्रह सौ सिखों की गिनती बढ़कर चार हजार से ऊपर हो गई, जिन में महिलाएं व वृद्ध भी थे ।

जब जत्था गुरद्वारा ननकाणा साहिब से दो मील दूर पहुंचा तो झब्बर जी ने सब को खड़ा करके एक रेखा खींच दी और कहा कि केवल वही सिख आगे आएं जिन्होंने गुरद्वारे के कब्जे के लिए शहीदी प्राप्त करनी है । इस प्रकार 2200 सिख सिर पर कफन बांध कर रेखा पार करके खड़े हो गए । जत्थेदार झब्बर जी ने दो सौ सिखों के ग्यारह जत्थे बना कर उन के जत्थेदार नियुक्त कर दिए और गुरद्वारा जन्म स्थान को कूच किया । सब से आगे घोड़े पर सवार सरदार करतार सिंघ झब्बर थे । इस जत्थे का प्रत्येक सिख छवियों, गंडासों, सफाजंग, कृपाण या लट्ठ से लैस था और इन को ऐसा कोई प्रण भी नहीं करवाया गया था कि इन्होंने अहिंसक रहना है या बदले में वार नहीं करना । ये तो आए ही *करो या मरो* की भावना से थे । कब तक शांतिपूर्ण मार खाते रहते ? सरदार बहादुर महिताब सिंघ, जो उस समय पंजाब सरकार के सरकारी वकील थे, घोड़े पर सवार होकर आगे से आ मिले और जत्थे को आगे जाने से यह कह कर रोका कि आगे सेना है और मशीनगन गाड़ी हुई हैं ।

झब्बर जी ने उत्तर दिया, ''अब पीछे हटने का समय नहीं, हमने गुरद्वारे का कब्जा लेना है या सम्मुख होकर शहीद हो जाना है।'' सरदार महिताब सिंघ वापिस मुड़ गए । झब्बर जी ने जत्थे को फिर संबोधित किया -''खालसा जी, अब हम गोली की मार के समीप पहुंच गए हैं । खालसे का काम है *अगांह*

कू त्रांघ पिछांह फेर न मुहड्ड़ा अर्थात जिस समय गोली चले, आप सब ने पूरे बल से दौड़ कर गोरा फौज पर हल्ला बोलना है । जो गोली खा कर गिर पड़ेंगे, उन को पड़े रहने देना । आगे बढ़ते जाओ और हाथों हाथ गोरों पर टूट पड़ो और उनसे मशीनगन छीन लो । हम अरदासा करके चले हैं कि गुरद्वारे पर कब्जा करेंगे या शहीद हो जाएंगे । जत्थे में से किसी सिख ने जयकारा बुलाया जो इतने जोर का था कि एक बार धरती भी कांपती प्रतीत हुई ।

जब जत्था रेलवे लाइन के समीप पहुंचा तो आगे से अंग्रेजी अधिकारी मिले - जिन में कमिश्नर, पुलिस जरनैल, फौजी जरनैल, डीसी और सरदार बहादुर महिताब सिंघ, सरदार हरबंस सिंघ अटारी, भाई जोध सिंघ व सरदार लाल सिंघ लाहौर वाले थे । डिप्टी कमिश्नर मिस्टर करी ने आगे बढ़कर झब्बर जी के जत्थे को रोकने के लिए कहा और साथ ही धमकी दी कि आगे गोरा फौज है, अगर आप आगे बढ़ेंगे तो गोली चल जाएगी ।'' झब्बर जी ने कहा, ''आप गोली चलाओ और मेरे जवानों के हाथ देखो । '' डी सी करी ने कहा, ''आप कुछ इंतजार करो, गुरद्वारे की चाबियां कल सुबह मिलेंगी ।'' झब्बर साहिब ने कहा, 'चाबियां अभी ही लेनी हैं, और गुरद्वारे से गौरा फौज भी अभी-अभी ही हटेगी ।'' जत्थे के सिखों ने हथियार तान लिए और अंग्रेज अधिकारियों को कहा, ''पीछे हट जाओ, नहीं तो नुक्सान के हम जिम्मेवार नहीं ।'' फिर डी सी करी ने दो मिनट में ही चाबियां जत्थेदार झब्बर जी के हाथ पकड़ा दीं और फौज को पीछे हटाया गया और उसी समय ही 7 सिंघों की कमेटी बना कर गुरद्वारे का कब्जा सिखों को दिया गया जिस के प्रधान सरदार हरबंस सिंघ थे।

कमेटी के मैंबर और कुछ मुखी सिख गुरद्वारे का ताला खोल कर अंदर गए। वहां पर उन्होंने जो दृश्य देखा, उस को अधिक देर तब बरर्दाश्त न कर सके । इतनी देर में सरदार उत्तम सिंघ और प्रेमियों ने जत्थे के लंगर पानी की सेवा की । कमेटी के सदस्यों ने यह तय किया कि सुबह 22 तारीख को शहीदों के दर्शन कराए जाएंगे । जत्थे ने सराए में आराम किया । सिखों ने रात को स्वयं गुरद्वारे की रखवाली की । रात भर अन्य सिखों के जत्थे पहुंचते रहे और सुबह तक हजारों सिख ननकाणा साहिब की धरती पर आ चुके थे ।

22 फरवरी को सुबह 11 बजे सिखों को अंदर जाने का आदेश हुआ । अंदर का नजारा देख कर सिखों की चीखें निकल गईं हैं । सारा फर्श लाल हुआ पड़ा था । सिखों के अधजले शरीर इधर-उधर पड़े हुए थे, तेल के कनस्तर जले पड़े थे । जहां कहीं से भी जले-सड़े शरीर मिले, वे गुरद्वारे के अंदर लाए गए । रेलवे लाइन के पास कुम्हारों की भट्ठियों में से सरदार दलीप सिंघ व वरियाम सिंघ का शरीर निकाला गया । इसी समय सरदार सुंदर सिंघ मजीठिया की रावलपिंडी से तार आई कि गवर्नर मैकलैगन कांड का दृश्य देखने को 23 फरवरी को पहुंच रहा है ।

अगले दिन, अथवा 23 फरवरी की सुबह को गवर्नर पंजाब सहित कई और अंग्रेज अफसर और कौंसलर, सरदार सुंदर सिंघ मजीठिया, लाला हरकृष्न लाल और सरदार फज़ल हुसैन सहित ननकाणा साहिब पहुंचे । गवर्नर भी यह दृश्य देख कर दुखी हुआ । फिर शहीदों की चिता गुरद्वारे के अहाते में (गुरू ग्रंथ साहिब के) प्रकाश स्थान के सामने, जिस स्थान पर शहीद गंज बना है तैयार की गई । भाई साहिब जोध सिंघ जी ने शहीदों के नमित अति वैराग्यपूर्ण भावपूर्ण अरदास की और शाम को 7 बजे शहीदों का सस्कार किया गया ।

आज शहीदगंज वाले स्थान पर शहीदों की यादगार है । इसके नीचे एक शीशे के ढक्कन के नीचे भूमिगत स्थान पर शहीदों की भिभूति और अस्थियां सुरक्षित रखी पड़ी हैं । कांड के पूरे हालात सात भाषाओं - पंजाबी, अंग्रेजी, फारसी, उर्दू, हिंदी आदि में अंकित, इस भूमिगत यादगार स्थल पर नीचे रखी हैं । इन शहीदों की याद में ही श्री अमृतसर में शहीद सिख मिशनरी कालेज खोला गया है और हर रोज हर गुरसिख अरदास में इन शहीदों की याद को ताजा करता है ।

यह शहादत अपने आप में इस बात की साक्षी है कि यदि ये सिख इस दिन ननकाणा साहिब न आए होते तो महंत इस दुर्घटना के लिए की गई तैयारी को 6 मार्च को होने वाले सम्मिलन के अवसर पर अमल में लाता, जिस तरह उसने 20 फरवरी को किया था और ऐसी दशा में जो कौमी हानि होती उस को शायद कई पुश्तों तक भी कौम पूरा न कर सकती । इस शहादत

का और लाभ यह हुआ कि वह सारे देश, और खास कर सिख कौम में जानबाजी की उस भावना को, जो गुरू गोबिंद सिंघ जी ने खालसा में भरी थी और इस को ये लोग भूलते जा रहे थे, फिर से जीवित और ताजा कर दिया । इस घटना का परिणाम यह हुआ कि सिखों ने प्रेरणा पाकर अकाली लहर और गुरु के बाग, गुरद्वारा गंगसर जैतो के मोर्चों में भी बेमिसाल कुर्बानियां दी ।

अकाली इस भयानक महां कांड के कारण भयभीत नहीं हुए बल्कि इस के विपरीत वे उन पदचिन्हों पर चलने को और अधिक दृढ़ हो गए जिन पर ननकाणा साहिब के शहीद चले थे ।

उर्दू अखबार *जिंमीदार* ने इस कत्लेआम में भाग लेने वाले मुसलमानों को बेहया और बेशर्म कह कर संबोधित किया,' *ओ बेशर्म मुसलमानो, तुम बंदूकें व तलवारें उनके खिलाफ इस्तेमाल करते हो जो ननकाणा साहिब अपना धार्मिक फर्ज पूरा करने के लिए गए थे ।''*

इस कांड की देन:

इस महान शहीदी कांड की सब से बड़ी देन यह थी कि इस ने सिखों के दिमाग में से अंग्रेजी राज्य की जी हजूरी व वफादारी की गंध को धो दिया। ननकाणा साहिब के कांड का एक प्रतिक्रम यह भी हुआ कि अकालियों को महंत-अंग्रेज सरकार की साजिश में शरीक नजर आने लग गए थे । इसलिए उन्होंने कुछ स्थानों पर गुरद्वारों पर कब्जे करने और तेज कर दिए ।

इस कांड के पश्चात पंजाबी कवियों व लिखारियों में नया जोश व उभार पैदा हो गया और अंग्रेजी साम्राज्य की परवाह न करते हुए कैद व जुर्मानों के बावजूद, बहुत जोशीली कविताएं लिखी और पढ़ी जातीं ।

इस कांड का सब से बड़ा लाभ यह हुआ कि वे कुर्बानियां, जो हमारे सिख पूर्वजों ने दी थीं, जिस को लोग केवल मनघड़ंत कहानियां ही समझकर भूलते जा रहे थे, उन को इस कांड ने ताजा कर दिया । लोग यह कहते थे कि यह कैसे हो सकता है कि बंद-बंद कटवाए गए हों, आरे से शरीर चिराया

गया हो, खोपड़ी उतरवाई गई हो, चरखड़ियों पर चढ़ा कर तूंबा-तूंबा किया गया हो, पर शहीद भाई लछमण सिंघ, दलीप सिंघ और उनके साथियों ने इन के दिलों पर विश्वास करवा दिया कि ऐसी हस्तियां सिख कौम में हुई हैं और सतगुरु की कृपा से आगे भी होती रहेंगी ।

उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में वर्तमान की सुध:

इन इतिहासिक घटनाओं का लाभ सही अर्थों में तो ही उठाया जा सकता है यदि इनसे वर्तमान हालात में सुधार करने हेतु शिक्षा ली जाए । आज भी यदि देखा जाए तो मौजूदा गुरद्वारे, प्रचार के केंद्र न बन कर कुछ और ही बने हुए हैं । जहां तक गुरद्वारों के प्रबंध का प्रश्न है, वह भी ठीक तौर पर नहीं हो रहा । बड़े-बड़े इतिहासिक गुरद्वारों से ले कर छोटी सिंघ सभाओं तक या अन्य सतसंग दरबार, गुरू नानक दरबार, कलगीधर गुरद्वारे या साधु संतों के डेरे ले लिए जायं तो इन को सही गुरमत के प्रचार के स्त्रोत नहीं कहा जा सकता ।

आज जो लोकतांत्रिक ढांचा, बड़े व छोटे गुरद्वारे तक हमने अपनाया है, इसको किसी और धर्म ने नहीं अपनाया और न ही सतगुरु साहिबान के समय या उस के पश्चात ही यह अपनाया गया था । ढांचा किसी देश की राजनीतिक प्रणाली के लिए तो कामयाब हो सकता है पर धर्म में इस का कोई लाभ नहीं हो सकता । यदि कौम के धार्मिक लीडरों की बहुसंख्या शराब पी रही है तो क्या यह निर्णय कौम पर लागू किया जा सकता है? कभी भी नहीं । यहां पर तो गुरू का हुकम ही चलेगा ।

आज गुरद्वारों में प्रजातांत्रिक ढांचे ने जो प्रबंधक कौम के सामने पेश किये हैं उन की करतूतों से सभी वाकिफ हैं । चुनावों में वही व्यक्ति विजयी हो सकते हैं जो अधिक रुपया खर्च कर सकते हैं या अधिक गुडे फिर रख कर जबर्दस्ती वोटें ले सकते है या अधिक पहुंच पैरवी वाले हैं या अपने खरीदे हुए निजी गुंडों को अधिक शराब व मुर्गे दे सकते हैं । इन चौधरियों का लक्ष्य धर्म का प्रचार होता ही नहीं और न ही इन को धर्म से कोई लगाव या प्यार

ही होता है । चुनावों में विजय प्राप्त करने के पश्चात शराब की पार्टियां करते हैं और गुरद्वारों को अपने निजी लाभ के लिए प्रयोग करते हैं । श्रद्धालु संगत को धोखा दे कर अपना उल्लू सीधा करते हैं । ये लोग प्रधान साहिब, सैक्रेटरी साहिब या खजांची साहिब कहलवा कर खुश होते हैं और धर्मात्मा होने का पाखंड करते हैं । इनमें से अधिकतर बेअमृतिए होते हैं । अपने स्वार्थ के लिए या अपनी चौधर को पोषित करने के लिए गुरपुरबों पर, जब कि सतगुरू जी के जीवन व उपदेशों के अधिकारी व्यक्तियों के द्वारा प्रचार होना चाहिए, ये लोग जिस से निजी काम निकलवाना हो उसी को बुला कर सम्मानित कर देते हैं और स्टेजों पर चढ़ा कर सतगुरू की हजूरी में हार पहनाए जाते हैं । ये मंत्री आदि लोग अधिकांश पराधर्मी ही हुआ करते हैं । ये पराधर्मी मंत्री या प्रमुख, सिख धर्म और इतिहास के बारे में जो गलत-प्रस्तुतीकंरण करते हैं उनका तो ईश्वर ही रक्षक है । इन चौधर के भूखों को पूछो, यदि कोई व्यक्ति राजनीति का माहिर है, जरूरी नहीं कि उस को धर्म की भी जानकारी हो । किसी प्रोफैसर को, जो कैमिस्टरी का माहिर है कहा जाए कि वह अर्थशास्त्र पर लैक्चर दे तो वह जिस अपुष्ट ढंग से पढ़ाएगा उसका सभी अंदाजा लगा सकते हैं । यही दशा सिख धर्म की होती जा रही है ।

जिन प्रबधकों को धर्म की स्वयं ही जानकारी नहीं होती उनको क्या पता कि प्रचारक क्या बोल रहा है । हर प्रकार का अधकचरा तथाकथित प्रचारक जो मर्जी है कह जाए इन को कुछ समझ नहीं होती । यदि कोई सही प्रकार का प्रचारक विशुद्ध गुरमत के नियमों की चर्चा करता है तो उसको इशारे कर के बिठा दिया जाता है और आगे के लिए पहले ही पाबंदी लगा दी जाती है कि आपने शराब के विरुद्ध नहीं बोलना, अमृतपान करने को जरूरी नहीं कहना, मूर्ति पूजा के विरुद्ध नहीं बोलना, आदि । क्योंकि उनके प्रबंधाधीन गुरद्वारे में ऐसा प्रचार होने पर, उन्हें भी गुरमत के विशुद्ध नियमों को धारण करना पड़ेगा । बल्कि वे ऐसी बातें करने पर बल देते हैं कि प्रधान साहिब, सैक्रेटरी साहिब व खजांची साहिब की चौधर पोषित हो सके । ऐसे प्रबंधकों के संरक्षण में गुरमत प्रचार कभी नहीं हो सकेगा । इन प्रबंधकों ने सिख धर्म को

समझौतावादी धर्म बना दिया है और जो-जो कुछ किसी को भाता है वही कुछ इन प्रचारकों के मुंह से निकलवाया जाता है ताकि कोई व्यक्ति नाराज न हो जाए और चंदा देना बंद न कर दे ।

आम प्रचारक साहिबान रोटी के मसले के लिए श्रोताओं को जो अच्छा लगता है वह ही बोलते हैं । और सतगुरू की गुरमत फिलासफी को गलत ढंग से पेश करके नौजवान पीढ़ी को धर्म के पक्ष से गुमराह करके सिखी से दूर ले जा रहे हैं ।

यह है मौजूदा गुरद्वारों की दशा । यह इतनी गंभीर बन चुकी है कि यदि सारे पक्षों से विचार की जाए तो यह महसूस होगा कि इस सारे ढांचे का ही सुधार करना होगा । यदि ऐसा सुधार समय पर न किया गया तो यह तथाकथित प्रबंधक और प्रचारक कौम को गहरी खड्ड में फेंक देंगे और फिर सुधार करने के लिए कौम में भारी कीमत देनी होगी । आज आवश्यकता है गुरद्वारा सुधार लहर के मुखियों जैसे ईमानदार, सूझवान, गुरमत में परिपक्व जीवन वाले, कुर्बानी वाले और हर लालच से ऊपर उठे हुए स्वाभिमानी लीडरों की, जो कौम को सही राह बता सकें और गुरद्वारों को फिर से सही प्रचार केंद्र बना सकें ताकि आने वाली पीढ़ी तक सिखी पहुंचाई जा सके ।

O